दीपक शर्मा आत्रेय

फगुआ

आज मुंडेर पर
गोरैया ने दी दस्तक
सोया-सा था मन
अचानक जग उठा
खिडकी से झांका
रंग बसंती
सरसो फूली
भँवरे ने पंख फैला
ली अँगडाई
खुल गई देखो
सर्दी के गठबंधन
की मुश्किल गांठे
आमोदप्रमोद को मन चाहें
खेले अंबीर गुलाल
गोरैया पुछू तुझसे मैं
फगुनाहट लें आई जो
शीतल कर गई
मेरा तन बदन
फगुआना हो गया हूँ
लगता है फागुन मे
फगुआ आयो रे।

संपर्क : दीपक शर्मा आत्रेय
1548/26 विवेकानंद कालोनी ढांड रोड कुरुक्षेत्र
पिन 136119 मोब. 8689000597